बातचीत

न. 11/2025 | भारतीय थलसेना का प्रकाशन | नवम्बर 2025

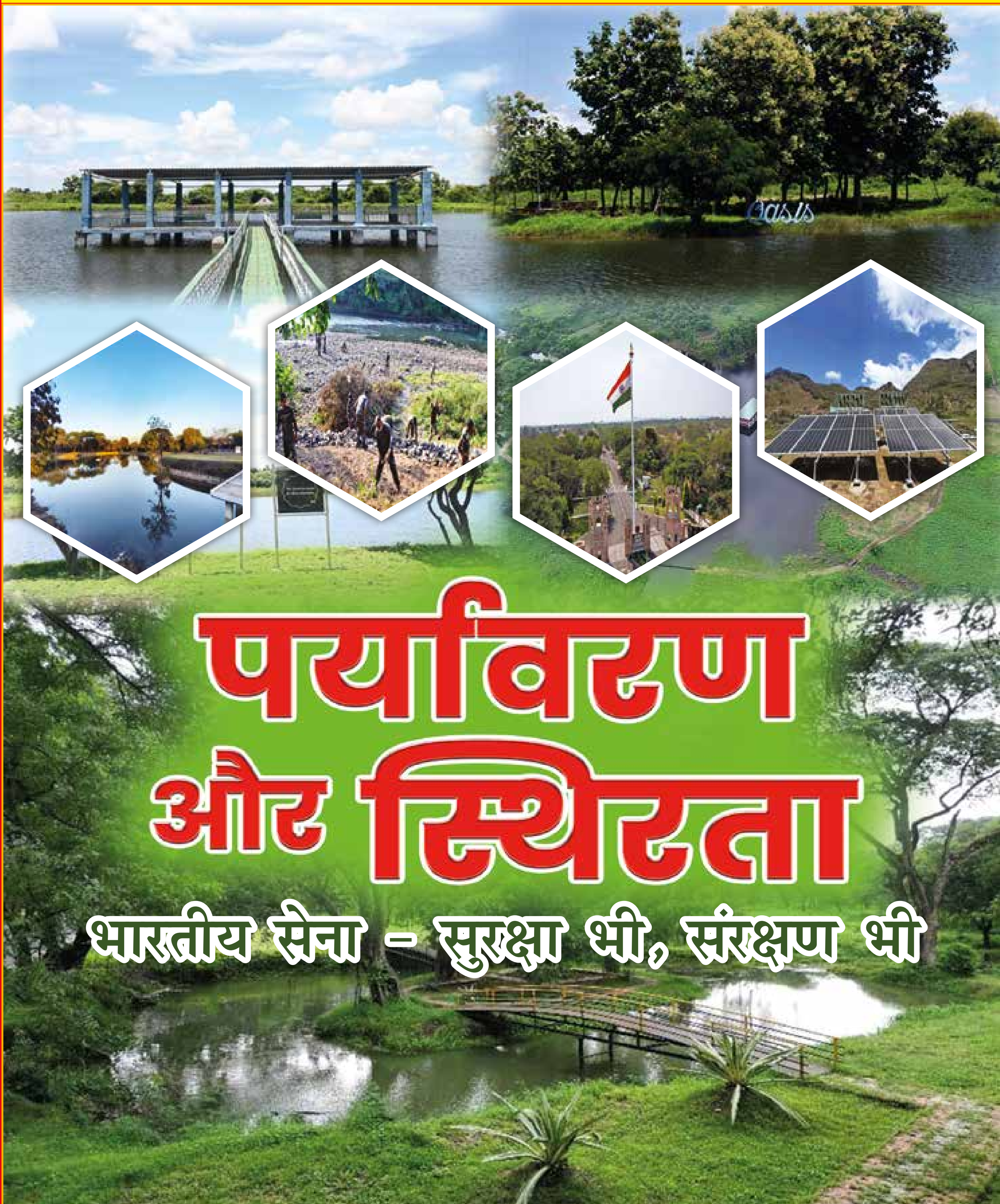

ईको-नेक्सस : पर्यावरण और स्थिरता

शिक्षा और
स्थायी विकास

प्लास्टिक प्रदूषण
और विकल्प

सामुदायिक भागीदारी
एवं स्वदेशी प्रथाएँ

नव प्रवर्तन

वायु गुणवत्ता
एवं प्रदूषण नियंत्रण

ऊर्जा एवं जलवायु
- नवीकरणीय ऊर्जा
- ऊर्जा दक्षता एवं हरित प्रौद्योगिकियाँ
- जलवायु परिवर्तन अनुकूलन एवं शमन
- कार्बन तटस्थता

विज्ञान नवप्रवर्तन एवं प्रौद्योगिकी
- हरित रसायन एवं पर्यावरण अनुकूल सामग्री
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं डिजिटल उपकरण
- पर्यावरण समाधानों में जैव-प्रौद्योगिकी

सतत विकास एवं शहरीकरण
- सतत शहर एवं स्मार्ट बुनियादी ढांचा
- अपशिष्ट प्रबंधन एवं चक्रीय अर्थव्यवस्था
- हरित भवन एवं पर्यावरण अनुकूल संरचना
- शहरी परिवर्तन शीलता एवं सतत परिवहन

प्राकृतिक संसाधन एवं संरक्षण
- वन संरक्षण एवं वनरोपण
- जल संसाधन प्रबंधन
- मृदा संरक्षण एवं भूमि उपयोग
- जैव विविधता संरक्षण एवं वन्यजीव संरक्षण

स्थायी भविष्य की ओर अग्रसर

2025 के तीसरे चाणक्य रक्षा संवाद के दौरान, सम्माननीय रक्षा मंत्री ने 28 नवंबर 2025 को लेह-लद्दाख के छुसुल में एनटीपीसी और भारतीय सेना की संयुक्त पहल से विकसित ग्रीन हाइड्रोजन परियोजना के सौर ऊर्जा घटक का ई-उद्घाटन किया, जिसने स्वच्छ और अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में नए मानक स्थापित किए। सम्माननीय रक्षा मंत्री ने भारतीय सेना की सतत प्रथाओं, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाते हुए 'ग्रीन इनिशिएटिव्स 2.0' नामक एक ब्रॉशर भी जारी किया।

सियाचिन की बर्फीली ऊँचाइयों से लेकर जैसलमेर के शुष्क रेगिस्तान तक, भारतीय सेना अनुशासन, साहस और प्रतिबद्धता का प्रतीक बनकर खड़ी है। देश की सीमाओं की रक्षा करने के अलावा, हमारे सैनिक शांति के साथ एक और लड़ाई लड़ रहे हैं – **'पर्यावरण के संरक्षण, सुरक्षा और पुनर्जीवन की लड़ाई'**। देशभर में सैनिक छावनियाँ आज पारिस्थितिक संरक्षण की मिसाल बन चुकी हैं। वृक्षारोपण अभियानों ने बंजर भूमि को हरे-भरे क्षेत्रों में बदल दिया है, जिससे स्थानीय जलवायु और जैव-विविधता दोनों में सुधार हुआ है। नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाएँ, विशेषकर सौर ऊर्जा संयंत्र, पारंपरिक बिजली पर निर्भरता कम कर रही हैं और कार्बन उत्सर्जन में उल्लेखनीय कमी ला रही हैं। वर्षा जल संचयन और ग्रे-वॉटर रीसाइक्लिंग प्रणालियाँ दिखाती हैं कि अनुशासित प्रबंधन कैसे संसाधनों की कमी को निरंतरता में बदला जा सकता है। प्रत्येक योजना "मिशन ग्रीन" की भावना को प्रतिध्वनित करती हैं- एक ऐसा मिशन जो दिखावे से दूर है, परंतु अधिक प्रभावशाली है।

पर्यावरण कार्यालय भारतीय सेना की एकल-खिड़की एजेंसी है, जो पर्यावरण और सततता से संबंधित सभी विषयों पर नीतियों/दिशानिर्देशों के निर्माण, योजना और निगरानी का कार्य करती है। यह कार्यालय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के साथ निकट समन्वय से कार्य करता है।

दूरभाष संख्या: 011-23018874

वर्ष की सर्वश्रेष्ठ स्वच्छ, हरित और सस्टेनबल स्टेशन प्रतियोगिता

भारतीय सेना ने कार्बन उत्सर्जन कम करने और सतत विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और हमारे सैन्य स्टेशनों और छावनियों को अक्सर प्रदूषित और लगातार बढ़ते शहरों के लंग्स (फेफड़ा) कहा जाता है। इस अभियान को मजबूत करने के लिए, भारतीय सेना ने 2021 से 'वर्ष का सर्वश्रेष्ठ स्वच्छ, हरित और सस्टेनबल स्टेशन प्रतियोगिता' की शुरुआत की है। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य स्टेशन के सभी निवासियों की सक्रिय भागीदारी से कार्बन उत्सर्जन कम करने के प्रयासों को बढ़ावा देना और सतत प्रथाओं को प्रोत्साहित करना है।

भटिंडा

कैटेगरी 1 (10000 से अधिक जनसंख्या)
भटिंडा और मऊ

अहमदाबाद

कैटेगरी 2 (5,000 से 10,000 के बीच जनसंख्या)
अहमदाबाद और श्री गंगानगर

लैंसडाउन

कैटेगरी 3 (5,000 से कम जनसंख्या)
लैंसडाउन और गंगटोक

एएससी केंद्र और कॉलेज

कैटेगरी ए मेजर स्टेब्लिशमेंट एएससी एंड सी एंड ऑफिसर्स ट्रेनिंग अकादमी, चेन्नई

जंगली

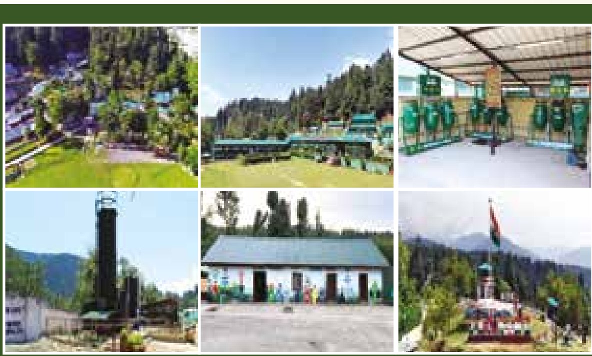

एएमएसए जंगली और उदयपुर में सर्वश्रेष्ठ

वाराणसी

वाराणसी और झांसी में सर्वश्रेष्ठ परिवर्तनकारी स्टेशन

बातचीत

अमृत सरोवर योजना/कृत्रिम तालाब निर्माण

यह परियोजना 24 अप्रैल 2022 (राष्ट्रीय पंचायत राज दिवस) को शुरू की गई थी, जिसका उद्देश्य भारत के प्रत्येक जिले में 75 अमृत सरोवर विकसित करना है, जो स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने का प्रतीक है। अब तक, भारतीय सेना ने 700 से अधिक ऐसे अमृत सरोवर बनाए हैं।

वर्षा जल संचयन

एसटीपी और ग्रे वाटर रीसाइक्लिंग

भारतीय सेना ने अपने प्रतिष्ठानों में अपशिष्ट जल के प्रबंधन के लिए सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) और ग्रे वाटर रीसाइक्लिंग सिस्टम लागू किए हैं, जो व्यापक राष्ट्रीय जल संरक्षण प्रयासों में सहायता करते हैं। सैन्य स्टेशनों पर विभिन्न परियोजनाएँ चल रही हैं।

स्थायित्व – नई फ्रंटलाइन

वृक्षारोपण और ‘एक पेड़ माँ के नाम’

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ‘एक पेड़ माँ के नाम’ अभियान की शुरुआत की। 22 सितंबर 2024 को, जैसलमेर में प्रादेशिक सेना की 128वीं इन्फैंट्री बटालियन और पारिस्थितिक कार्य बल ने मात्र एक घंटे में 5 लाख से अधिक पौधे लगाकर एक उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की और इसे वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा मान्यता दी गई।

75 लाख से अधिक पेड़ और संख्या में वृद्धि जारी है

भूमि आधारित सौर ऊर्जा

सौर उपकरण और लाइटें

छत पर सौर गीजर

सौर ऊर्जाकरण

भारतीय सेना की इकाइयों द्वारा 68 परियोजनाएँ शुरू की गई हैं, जिनमें ग्राउंड सोलर पावर और रूफटॉप सोलर पैनल परियोजनाएँ शामिल हैं, जिनसे 91 मेगावाट सौर ऊर्जा उत्पन्न होती है।

अपशिष्ट मुक्त सैन्य अभियान

भारतीय सेना का लैंडफिल-मुक्त भविष्य के लिए हरित मिशन अक्टूबर 2023 में शुरू किया गया था, जिसका उद्देश्य सभी सैन्य स्टेशनों को लैंडफिल-मुक्त बनाना है।

प्रमुख योजनाएं - बदलाव के लिए बोतलें

बिसलेरी इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड ने अपनी प्रमुख योजना ***“बॉटल्स फॉर चेंज”*** के माध्यम से प्लास्टिक पुनर्चक्रण और जिम्मेदार अपशिष्ट प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए 20 जून 2025 को मानेकशॉ सेंटर के साथ सहयोग करने हेतु हाथ मिलाया है।

सियाचिन

स्वच्छता और रखरखाव 'स्वच्छता ही सेवा कैंपेन'

भारतीय सेना ने माउंट एवरेस्ट, सियाचिन ग्लेशियर और अन्य स्थानों पर 'बेस कैंप' सहित दूर और अलग-थलग स्थानों पर अपशिष्ट प्रबंधन में कई योजनाएं शुरू की हैं। इसके अलावा, पूरे भारत में नदियों, झीलों और तालाबों के रूप में जल निकायों को बचाने और पुनर्जीवित करने का कार्य भी लगातार किया जा रहा है।

इलेक्ट्रिक वाहनों का उपयोग

कार्बन उत्सर्जन को कम करने और ऊर्जा स्थिरता प्राप्त करने के राष्ट्रीय दृष्टिकोण के अनुरूप, भारतीय सेना ने अपने परिवहन बेड़े में इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) को शामिल करने के लिए सक्रिय कदम उठाए हैं। सेना की ईवी पहल राष्ट्रीय इलेक्ट्रिक मोबिलिटी मिशन योजना (एनईएमएमपी), फेम इंडिया योजना (हाइब्रिड और ईवी को तेजी से अपनाना और निर्माण), और सेना के पर्यावरण एवं स्थिरता नीति ढांचे द्वारा निर्देशित है।

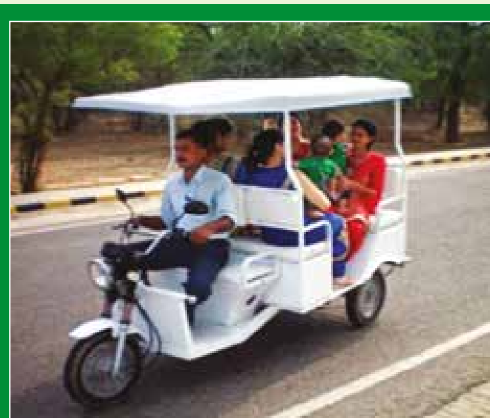

बीएलडीसी पंखे - 35 प्रतिशत बचत

सेंसर आधारित स्ट्रीट लाइटें

स्मार्ट सेंसर्स और मीटर्स का उपयोग

भारतीय सेना के विजन 2030 और आगे नवीकरणीय माइक्रो-ग्रिड, एआई संचालित ऊर्जा विश्लेषण और स्मार्ट ऊर्जा मीटर के माध्यम से छावनियों में नेट-जीरो ऊर्जा खपत के लक्ष्य को प्राप्त करना है।

भारतीय सेना की प्रमुख योजनाएं

हाइड्रोजन फ्यूल सेल बस

भारतीय सेना और इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आइओसीएल) के बीच जीवाश्म ईंधन के सतत विकल्पों पर हुआ "स्वर्णिम सहयोग" 27 मई 2024 को हाइड्रोजन फ्यूल सेल तकनीक से संचालित बस की तैनाती के रूप में सामने आया है। यह भारतीय सेना में अपनी तरह की पहली बस है। हाइड्रोजन फ्यूल सेल तकनीक शून्य-उत्सर्जन परिवहन सुनिश्चित करती है।

भारतीय सेना द्वारा 113 इलेक्ट्रिक बसों का अनुबंध

भारतीय सेना ने 17 अक्टूबर 2025 को मैसर्स जेबीएम ऑटो लिमिटेड के साथ ₹130.58 करोड़ का अनुबंध किया, जिसके अंतर्गत 113 इलेक्ट्रिक बसें एवं 43 फास्ट चार्जर शामिल हैं।

ग्रीन हाइड्रोजन आधारित विद्युत संयंत्र

भारतीय सेना, नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन (एनओपीसी) के सहयोग से लद्दाख के चुशुल में डीजल जनरेटरों के स्थान पर एक सौर-हाइड्रोजन आधारित माइक्रोग्रिड स्थापित कर रही है, जो दूरस्थ क्षेत्रों को 24X7 बिजली उपलब्ध कराएगा। इस परियोजना में सौर माइक्रोग्रिड के माध्यम से ग्रीन हाइड्रोजन का उत्पादन किया जाता है, जो ऊर्जा भंडारण माध्यम के रूप में कार्य करता है, जिससे अत्यधिक तापमान में भी लगातार 200 किलोवॉट बिजली आपूर्ति सुनिश्चित होती है। यह पहल ईंधन लॉजिस्टिक्स तथा कार्बन उत्सर्जन दोनों को कम करती है।

भवन संरचना में भावी प्रवृत्तियाँ

हरित भवन - पर्यावरण-अनुकूल भवन संरचना

भारतीय सेना नवीकरणीय ऊर्जा, प्रभावी डिजाइन तथा सतत सामग्रियों के उपयोग के माध्यम से ग्रीन बिल्डिंग अवधारणाओं को अपना रही है। इसका उद्देश्य आत्मनिर्भर, पर्यावरण-अनुकूल अवसंरचना विकसित करना है, जिससे कार्बन फुटप्रिंट कम हो और ऊर्जा आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिले।

- ऊर्जा दक्षता और नवीकरणीय ऊर्जा का समावेशन (सोलर, जियोथर्मल)
- जल संरक्षण (वर्षा जल संचयन, सीवेज ट्रीटमेंट, ग्रे-वॉटर का पुनः उपयोग)
- सतत/पर्यावरण-अनुकूल सामग्री (फ्लाई-ऐश ईंटें, पुनर्चक्रित सामग्री, कम-उत्सर्जन निर्माण)
- कचरा प्रबंधन (कम करना, पुनः उपयोग, पुनर्चक्रण; ऑन-साइट ट्रीटमेंट)
- पारिस्थितिकी और हरित आवरण संरक्षण हेतु साइट योजना (पेड़ों को संरक्षित रखना, लैंडस्केपिंग)
- लंबे समय तक चलने वाली और आसान रखरखाव वाली प्रणालियों का डिजाइन (विशेषकर दूरस्थ स्थानों के लिए महत्त्वपूर्ण)
- इनडोर पर्यावरण गुणवत्ता (वेंटिलेशन, तापीय आराम, प्राकृतिक प्रकाश, कुशल एचवीएसी प्रणालियाँ)

थल सेना भवन, नई दिल्ली

भारतीय सेना के लिए निर्माणाधीन नया मुख्यालय परिसर गृह-व्ट मानदंडों (भारत में हरित भवनों के लिए एक उच्च रेटिंग) के अनुरूप है। इसमें सौर पैनल, इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग अवसंरचना, सीवेज उपचार संयंत्र, कम्पोस्ट संयंत्र जैसी सुविधाएँ शामिल होंगी - इसका उद्देश्य नेट-जीरो/लगभग शुद्ध ऊर्जा और कम पर्यावरणीय प्रभाव प्राप्त करना है।

झाँसी में जियोथर्मल आधारित नेट-जीरो एनर्जी भवन

भारतीय सेना ने (एमईएस/आर्मी इंजीनियर वर्क के अंतर्गत) झाँसी में अपना पहला जियोथर्मल आधारित नेट-जीरो ऊर्जा भवन का उद्घाटन किया है। इस भवन में भूमिगत ताप विनिमय के लिए दस बोरहोल (प्रत्येक लगभग 120 मीटर गहरा) लगाए गए हैं, जिससे अत्यधिक बाहरी तापमान के बावजूद भीतर प्रभावी हीटिंग/कूलिंग और आरामदायक तापमान बनाए रखा जा सकता है। छत पर स्थापित सोलर पैनल भवन की वार्षिक खपत से अधिक नवीकरणीय ऊर्जा उत्पन्न करते हैं।

थलसेनाध्यक्ष पृष्ठ

थलसेनाध्यक्ष ने त्रिशक्ति कोर की अग्रिम चौकियों का दौरा किया और फॉर्मेशन की परिचालन तैयारी की समीक्षा की। थलसेनाध्यक्ष को तैयारी, संयुक्तता तथा क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के एकीकरण को बढ़ाने हेतु प्रमुख योजनाओं से अवगत कराया गया।

थलसेनाध्यक्ष ने खरगा कोर का भी दौरा किया, जहाँ उन्होंने फॉर्मेशन की परिचालन तैयारी की समीक्षा की। उन्हें युद्धक तत्परता बढ़ाने, अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों के एकीकरण, अंतर-एजेंसी समन्वय को मजबूत करने और राष्ट्र-निर्माण के प्रयासों को आगे बढ़ाने संबंधी योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई।

थलसेनाध्यक्ष ने तीन महान खिलाड़ियों बलबीर सिंह कुलर (सेवानिवृत्त), सूबेदार मुरलीकांत पेटकर (सेवानिवृत्त) और सूबेदार मेजर (मानद कप्तान) विजय कुमार (सेवानिवृत्त) को उनकी भारतीय खेल जगत और राष्ट्र के प्रति असाधारण योगदान के सम्मान में लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड प्रदान किया।

थलसेनाध्यक्ष ने एमपी-आईडीएसए में दिल्ली डिफेंस डायलॉग 2025 के अंतर्गत एक विशेष संबोधन किया। उन्होंने बताया कि कैसे उभरती हुई तकनीक का लोकतंत्रीकरण युद्धों को आकार दे रहा है और उन्होंने शिक्षा जगत, उद्योग और सशस्त्र बलों के तालमेल के माध्यम से मानव-केंद्रित नवाचार पर बल दिया।

थलसेनाध्यक्ष ने ब्लैक कैट डिवीजन की अग्रिम चौकियों का दौरा किया और उन्हें सैन्य संरचना की परिचालन तत्परता और क्षमता वृद्धि योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई। उन्होंने ड्रोन सहित स्वदेशी उपकरणों का प्रदर्शन भी देखा, जो सैन्य संरचना की निगरानी और परिचालन क्षमताओं को बढ़ा रहे हैं।

थलसेनाध्यक्ष ने मुंबई के नौसेना डॉकयार्ड में आईएनएस माहे के जलावतरण समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर बोलते हुए, सेना प्रमुख ने इस बात पर प्रकाश डाला कि आईएनएस माहे का सेना में शामिल होना जटिल लड़ाकू प्लेटफार्मों को स्वदेशी रूप से डिजाइन करने और तैनात करने की भारत की बढ़ती क्षमता को दर्शाता है।

संक्षिप्त समाचार

रियर एडमिरल मोहम्मद ताहिन, इंस्पेक्टर, मोरक्कन रॉयल नेवी, ने उप थलसेनाध्यक्ष से मुलाकात की। बातचीत द्विपक्षीय रक्षा सहयोग को मजबूत करने और सैन्य सहभागिता को प्रगाढ़ करने पर केंद्रित रही।

जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ दक्षिण पश्चिमी कमान ने नवगठित भैरव स्ट्राइक फोर्स की परिचालन तैयारियों और सत्यापन प्रशिक्षण को देखा। सैनिकों ने अपनी परिचालन क्षमता और आक्रामक कार्यों को त्वरित, सटीक और सफलतापूर्वक करने की तत्परता का प्रदर्शन किया।

डीजीएमओ ने बांग्लादेश उच्चायोग में आयोजित 54वें बांग्लादेश सशस्त्र बल दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। उन्होंने प्रसिद्ध 1971 के पूर्व सैनिकों से मुलाकात की और उनके साहस तथा स्थायी विरासत को श्रद्धांजलि दी।

उत्तर भारत क्षेत्र के जनरल ऑफिसर कमांडिंग ने हर्षिल में एक सामुदायिक रेडियो स्टेशन का उद्घाटन किया। यह दूरस्थ सीमावर्ती समुदायों के साथ जुड़ाव को मजबूत करने की दिशा में एक और सार्थक कदम है। यह नया स्टेशन 24 नवंबर 2025 को जोशीमठ में स्थापित होने के बाद देवभूमि में इस तरह की दूसरी पहल है।

गजराज कोर ने उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में परिचालन क्षमता बढ़ाने के लिए एक स्वदेशी उच्च-क्षेत्र मोनो रेल प्रणाली का सफलतापूर्वक विकास किया है। यह उन्नत लॉजिस्टिक समाधान ऑपरेशनल आपूर्ति श्रृंखला को सशक्त बनाएगा।

ग्रेटर नोएडा में आयोजित विश्व मुक्केबाजी कप 2025 में भारतीय सेना के मुक्केबाजों ने शानदार प्रदर्शन किया। रिंग में उतरे नौ भारतीय सेना के मुक्केबाजों ने पदक हासिल किया, जिनमें दो महिला मुक्केबाज भी शामिल थीं, जिन्होंने दो स्वर्ण पदक जीते - यह पहली दुर्लभ और उल्लेखनीय उपलब्धि थी।

संक्षिप्त समाचार

दक्षिणी कमान ने पश्चिमी समुद्र तट, रेगिस्तानी क्षेत्र और रन व क्रीक क्षेत्र में बड़े पैमाने पर बहु-क्षेत्रीय युद्धाभ्यासों के साथ

एकीकृत त्रि-सेवा अभ्यास त्रिशूल का आयोजन किया। दक्षिणी कमान के जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ ने माधवपुर समुद्र तट पर समापन चरण की समीक्षा की और एकीकृत थल, वायु और नौसेना के साथ-साथ जल-थल संयुक्त लैंडिंग ऑपरेशन भी देखे।

पूर्वी कमान ने तीनों सेनाओं का अभ्यास पूर्वी प्रचंड प्रहार आयोजित किया, जिसमें नवीनतम युद्ध तकनीक, रात्रिकालीन सक्षम, सभी मौसम में काम करने वाले एफपीवी, स्वार्म ड्रोन और यूएएस इलेक्ट्रोमैग्नेटिक स्पेक्ट्रम में कार्य करते हुए अटैक हेलीकॉप्टरों और कंपोजिट दिव्यास्त्र बैटरी के साथ रियल-टाइम सेंसिंग, लक्ष्यीकरण और समन्वित फायर प्रदान करता है।

पश्चिमी कमान के जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ ने राम प्रहार अभ्यास कर रहे खरगा कोर के सैनिकों के रणनीतिक अभ्यास, युद्धक्षेत्र प्रक्रियाओं और युद्ध एकीकरण की समीक्षा की।

जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ सूर्य कमान ने उत्तरी सीमाओं पर स्थित गोल्डन की डिविजन की ऑपरेशनल तैयारी और जारी तकनीक-सक्षम योजनाओं की समीक्षा की।

उत्तरी कमान के जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ ने आतंकवाद विरोधी ग्रिड की समीक्षा के लिए बसंतगढ़ और रामपुर का दौरा किया। जनरल ने सभी रैंकों को आंतरिक क्षेत्रों में उभरते खतरों के प्रति सतर्क और सक्रिय रहने का आह्वान किया। इस यात्रा के दौरान उन्होंने सैनिकों से बातचीत भी की और जम्मू-कश्मीर को आतंकवाद मुक्त रखने के लिए उनकी व्यावसायिकता और अटूट प्रतिबद्धता की सराहना की।

जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ आर्मी ट्रेनिंग कमान ने मेरठ स्थित रीमाउंट वेटरनरी कोर सेंटर एंड कॉलेज का दौरा किया। जनरल ने मिलिट्री वर्किंग डॉग्स, घुड़सवारी (इक्वेस्ट्रियनिज्म) और पशु चिकित्सा प्रशिक्षण के लिए उपलब्ध प्रशिक्षण सुविध ाओं की समीक्षा की।

संक्षिप्त समाचार

ऑपरेशन पवन की स्मृति में थल सेनाध्यक्ष ने एक भव्य समारोह में राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित की और सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीरों को श्रद्धांजलि अर्पित की। वीरगति प्राप्त सैनिकों के सम्मान में उनके साथ मेजर जनरल अशोक के. मेहता (सेवानिवृत्त), लेफ्टिनेंट कर्नल अतुल कोचर, एमवीसी (सेवानिवृत्त) तथा मेजर रामास्वामी परमेश्वरन, पीवीसी (मरणोपरांत) की पत्नी श्रीमती उमा परमेश्वरन ने भी पुष्पचक्र अर्पित किए।

जनरल ऑफिसर कमांडिंग स्पीयर कोर ने अरुणाचल प्रदेश के विजयनगर का दौरा किया और गोरखा पूर्व सैनिकों और लिसु समुदायों से बातचीत की। उन्होंने राष्ट्र की सुरक्षा में उनकी निष्ठावान सेवा और योगदान के लिए पूर्व सैनिकों की सराहना की।

भारतीय सेना के सभी रैंकों के लिए नई दिल्ली में फीचर फिल्म '120 बहादुर' का विशेष प्रीमियर आयोजित किया गया, जिसमें थलसेनाध्यक्ष मुख्य अतिथि थे। यह फिल्म 13 कुमाऊं रेजिमेंट के 120 भारतीय सैनिकों की एक सशक्त सच्ची कहानी बयां करती है, जिन्होंने 1962 में रेजांग ला की लड़ाई के दौरान असाधारण साहस का परिचय दिया था।

थलसेनाध्यक्ष ने अंबाला छावनी में चार विशिष्ट पूर्व सैनिकों को 'वेटरन अचीवर अवॉर्ड' से सम्मानित किया, सेवा निवृत्ति के बाद राष्ट्र-निर्माण, सामाजिक सेवा और युवाओं के सशक्तिकरण में उनके उत्कृष्ट योगदान की सराहना की।

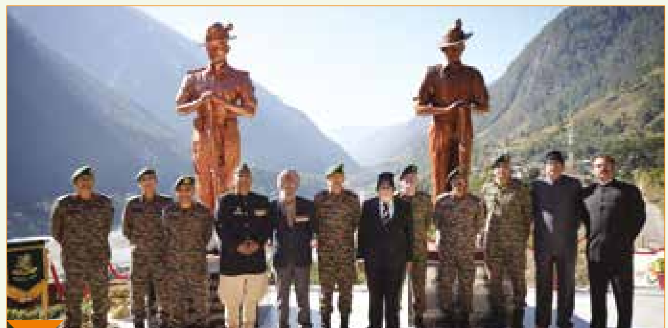

ईस्टर्न कमान ने 1962 के वीरों की स्मृति में 63वां वालोंग डे मनाया। समारोह में पुष्पांजलि अर्पित करना, वालोंग की लड़ाई के नायकों को समर्पित प्रतिमाओं का अनावरण, ड्रोन प्रदर्शन और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियाँ शामिल थीं।

भारतीय सेना ने रेजांग ला डे मनाते हुए, 13 कुमाऊँ के उन अमर वीरों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की जिन्होंने रेजांग ला की लड़ाई के दौरान राष्ट्र की सेवा में सर्वोच्च बलिदान दिया। उनका साहस, कर्तव्यनिष्ठा और समर्पण आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत है।

इस माह का उपकरण

एएसएमआई

भारत की पहली स्वदेशी 9 मिमी मशीन पिस्टल डीआरडीओ और भारतीय सेना द्वारा संयुक्त रूप से विकसित की गई है। इन्फैंट्री स्कूल, मऊ और डीआरडीओ के आयुध अनुसंधान एवं विकास संस्थान (एआरडीई), पुणे ने पूरक क्षेत्रों में अपनी-अपनी विशेषज्ञता का उपयोग करके इस हथियार का डिजाइन और विकास किया है। इस हथियार को चार महीने के रिकॉर्ड समय में विकसित किया गया है। यह मशीन पिस्टल 9 मिमी गोला-बारूद दागती है और इसका ऊपरी रिसीवर एयरक्राफ्ट ग्रेड एल्युमीनियम से बना है और निचला रिसीवर कार्बन फाइबर से बना है। विभिन्न हिस्सों के डिजाइन और प्रोटोटाइप तैयार करने में 3डी प्रिंटिंग प्रक्रिया का उपयोग किया गया है, जिसमें ट्रिगर कंपोनेंट भी शामिल हैं, जो मेटल 3डी प्रिंटिंग से बनाए गए हैं।

तकनीकी श्रेष्ठता

- **प्रकार:** सबमशीन गन/मशीन पिस्टल/व्यक्तिगत रक्षा हथियार (पीडीडब्ल्यू)।
- **कैलिबर:** 9 ग 19 मिमी पैराबेलम।
- **कार्य:** सीधा ब्लोबैक।
- **वजन:** फोल्डेड लंबाई के साथ 2.2 किलोग्राम।
- **लंबाई:** 372 मिमी (स्टॉक फोल्ड की हुई)।
- **बैरल की लंबाई:** 7.2 इंच (180 मिमी) या 8 इंच (203.2 मिमी) प्रकार।
- **फायर की दर:** 750 राउंड/मिनट।
- **प्रभावी रेंज:** 100 मीटर।
- **फीड सिस्टम:** 32 राउंड ऊँचा और 27 राउंड कम क्षमता।
- **रिसीवर सामग्री:** ऊपरी भाग एयरक्राफ्ट-ग्रेड एआई और निचला भाग नायलॉन से बना है जिसमें मजबूती के लिए स्टील के इन्सर्ट लगे हैं।

मुख्य विशेषताएँ

- हैवी वेपन डिटैचमेंट जैसे मोर्टार, एटीजीएम, आरए, एमएमजी क्रू के लिए पर्सनल वेपन
- ए व्हीकल क्रू के लिए पर्सनल वेपन -टीके/बीएमपी/एसपी आर्टिलरी/एईआरवी
- एयर क्रू के लिए पर्सनल वेपन - हेलीकॉप्टर/युद्धक
- रेडियो/राडार ऑपरेशन के लिए पर्सनल वेपन।
- वीआईपी पोर्ट ड्यूटी।
- सीआई/सीटी ऑपरेशन।
- पुलिस ड्यूटी/कानून प्रवर्तन।

उपयोगिता

यह हथियार सशस्त्र बलों में भारी हथियार डिटैचमेंट, टैंक कमांडर, विमान चालक दल, ड्राइवर/डिस्पैच राइडर, रेडियो/राडार ऑपरेटर, क्लोज क्वार्टर बैटल, काउंटर-इंसर्जेंसी और काउंटर-टेररिज्म ऑपरेशनों आदि में एक व्यक्तिगत हथियार के रूप में व्यापक संभावनाएँ रखता है। इसका केंद्रीय और राज्य पुलिस संगठनों, वीआईपी सुरक्षा ड्यूटी तथा सामान्य पुलिसिंग में भी बड़े पैमाने पर उपयोग होने की संभावना है। मशीन पिस्टल की उत्पादन लागत प्रति इकाई 50,000 रुपये से कम रहने की संभावना है और इसके निर्यात की भी पर्याप्त संभावनाएँ हैं। भारतीय सेना ने उत्तरी कमान में 550 मशीन पिस्टल शामिल की हैं।

वालोंग का युद्ध - भारत-चीन युद्ध 1962

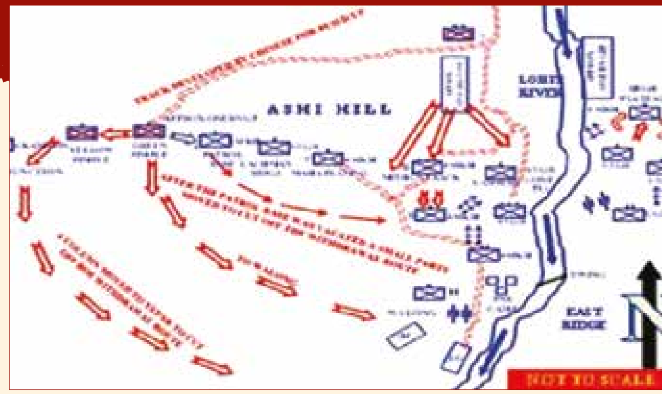

वालोंग का युद्ध 1962 के भारत-चीन युद्ध के सबसे भीषण और वीरतापूर्वक लड़े गए युद्धों में से एक था। 21 अक्टूबर से 16 नवंबर 1962 तक, चार इन्फैंट्री बटालियनों ने सहायक सशस्त्र बलों और असम राइफल्स के अन्य सैनिकों के साथ मिलकर मोर्चा संभाले रखा और पीएलए की डिवीजन-से-भी-अधिक शक्ति वाली टुकड़ी के लगातार हमलों को विफल किया। 1962 में इस क्षेत्र को प्रशासनिक सहायता निकटतम सड़क तेजू से मिलती थी। सैनिकों ने पिछले महीनों में लगभग 200 किमी लंबे एनिमल ट्रांसपोर्ट (एटी) ट्रैक के सहारे आगे बढ़कर इस सेक्टर में रक्षा-संरचना बनाई थी। वलोंग का एडवांस्ड लैंडिंग ग्राउंड (एएलजी) उस समय कच्चा था और वहाँ केवल एक ऑटर विमान, जिसमें 10 सैनिक बैठ सकते थे, उतर पाता था। लंबी सप्लाई लाइन के कारण आवश्यक भंडार, गोला-बारूद और पर्याप्त आर्टिलरी सहायता की कमी रहती थी।

इन कठिन परिस्थितियों के बावजूद, 11 इन्फैंट्री ब्रिगेड के सैनिकों ने वलोंग के उस समय कम जानकारी वाले गांव में अपनी रक्षा संरचनाएं स्थापित कीं, जो वलोंक के पांच किलोमीटर उत्तर में नमती के मैदारों में भारतीय सेना द्वारा लड़ा गया पहला सफल रक्षात्मक युद्ध था जो बाद में राष्ट्रीय गौरवगाथा का हिस्सा बन गया। भारतीय सेना ने अग्रिम मोर्चों पर किबिथू और दिछू के दोनों ओर दो कंपनियाँ तथा असम राइफल्स की 2 कंपनी की दो प्लाटून तैनात किए थे। इस सेक्टर में मुख्य रक्षा-संरचनाएँ लोहित नदी के दोनों किनारों पर नामटी मैदानों, मिथुन स्पर, महा पठार, लोहित नदी के पश्चिमी किनारे पर लैडर्स तथा पूर्वी किनारे पर लेज और डोंग तक फैली थीं। 6 कुमाऊँ की 'ए' कंपनी, जो अग्रिम स्थान मदन रिज (तब मैकमोहन रिज के नाम) पर तैनात थी, उस पर 21 अक्टूबर को हमला किया गया। इस जुझारू रक्षात्मक लड़ाई में भारतीय सेना के केवल 04 सैनिक शहीद हुए, जबकि पीएलए को 60 सैनिक हताहत हुए।

नामती में 6 कुमाऊँ, 4 सिख और 2/8 गोरखा के सैनिकों ने 25 से 27 अक्टूबर तक पीएलए के सभी हमलों को बार-बार विफल किया। आशि हिल पर स्क्रीन लोकेशन में तैनात 6 कुमाऊँ के सैनिकों ने पीएलए को भारी नुकसान पहुँचाया। नामती मैदान के क्षेत्र को दुश्मन ने 'टाइगर'स माउथ' नाम दिया था, क्योंकि 4 सिख ने इस क्षेत्र में 600 से अधिक पीएलए सैनिकों को जाल में फँसा दिया था और 25 अक्टूबर को लगभग 200 पीएलए सैनिक मारे गए थे। यह इलाका तीन दिशाओं मिथुन स्पर, महा पठार और लैडर पर तैनात सैनिकों की गोलीबारी से प्रभावी रूप से नियंत्रित था। बार-बार हमले करने के बावजूद, पीएलए 16 नवंबर तक नामती की रक्षा-रेखा को भेद नहीं सका।

6 कुमाऊँ ने वलोंग की पश्चिमी ऊँचाइयों पर स्थित ट्राई जंक्शन पर कब्जा किया और 14 नवंबर को पीएलए द्वारा पश्चिम से नामती को मात देने के प्रयास में ग्रीन और येलो पिम्पल क्षेत्र पर कब्जा करने के बाद उन पर पलटवार किया। 1962 के युद्ध के दौरान भारतीय सेना द्वारा किया गया यह मात्र दूसरा आक्रामक था। आर्टिलरी की मदद के अभाव के बावजूद, 0930 बजे दिन के उजाले में हमला किया गया। हमले पर गए 6 कुमाऊँ के 200 सैनिकों में से केवल 90 ही वापस ट्राई जंक्शन लौट सके। 15 नवंबर को प्रातः 0430 बजे, दुश्मन ने ट्राई जंक्शन क्षेत्र पर हमला किया, जिसे सफलतापूर्वक विफल कर दिया गया। उसी दिन शाम 1800 बजे पीएलए ने दोबारा हमला किया और उसके बाद हर चार घंटे के अंतराल पर लगातार हमले जारी रखे।

इन वीरतापूर्ण अभियानों में 6 कुमाऊँ के 118 सैनिकों, 4 डोगरा के 110 सैनिकों और 4 सिख के 82 सैनिकों ने सर्वोच्च बलिदान दिया। यह युद्ध अद्भुत वीरता और असाधारण साहस की अनेक गाथाओं से भरा हुआ है, जहाँ भारतीय सैनिकों ने भारी विपरीत परिस्थितियों के बावजूद दुश्मन का सामना किया। वलोंग सेक्टर वह एकमात्र क्षेत्र था जहाँ भारतीय सेना ने आगे बढ़ती पीएलए पर पलटवार किया और दुश्मन को भारी क्षति पहुँचाई।

4 सिख के सिपाही केवल सिंह, लांस हवलदार कृपा राम, लेफ्टिनेंट योग राज पलटा; 6 कुमाऊँ के नायक बहादुर सिंह, कैप्टन प्रेम नाथ भाटिया और कैप्टन रवि माथुर; तथा 2 असम राइफल्स के नायब सूबेदार जंगन लिम्बू की वीरता आज भी देश के युवाओं को प्रेरित करती है। 'स्वयं से पहले सेवा' की भारतीय सेना की परंपरा पर खरे उतरते इन बहादुर सैनिकों के बलिदान आज भी वलोंग के प्रहरी बनकर तैनात सैनिकों को प्रेरित और मार्गदर्शित करते हैं।

विज्ञप्ति

2025 के लिए जूनियर कमीशन अधिकारी हेतु सामरिक मार्गदर्शन (एडीएन पर थलसेनाध्यक्ष पेज अपलोड है)

- **मूल विचार:** जेसीओ "लीडर और लीड" की संरचना में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी हैं। इस स्तर की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि जेसीओ अपने निर्धारित कार्य-क्षेत्र की पूर्ण जिम्मेदारी स्वयं लें। इसी दिशा में, जेसीओ के लिए सामरिक मार्गदर्शन का मूल विचार होगा-"जिम्मेदारी का अधिकार"।
- **आवश्यक दक्षताएँ:**
  - **प्रेरित करने की शक्ति**
  - **नेतृत्व करने की शक्ति**
  - **परामर्श की शक्ति**
  - **आत्मसात करने/सुनने की शक्ति**
  - **परिवर्तन लाने की शक्ति**

ARMY WELFARE PLACEMENT ORGANISATION

CONTACT DETAILS : AWPO REGIONAL OFFICES

WEBSITE : WWW.EXARMYNAUKRI.COM

Ser No	Regional Offices	Area of Responsibility	Telephone & Email
1.	HQ AWPO	Pan India	011-25675385, 1800-11-9922 hq.awpo@awpo.in
2.	AWPO RO Ahmedabad	Gujarat	079-22864377, 9409698280 ro.ahmedabad@awpo.in
3.	AWPO RO Ambala	Haryana	0171-2600352, 9815181791 ro.ambala@awpo.in
4.	AWPO RO Bangaluru	Karnataka & Lakshadweep	080-25580759, 9844246402, 9141397539 ro.bangalore@awpo.in
5.	AWPO RO Chandigarh	Chandigarh	0172-2589495, 7589369318, 8146580146 ro.chandigarh@awpo.in
6.	AWPO RO Chennai	Tamil Nadu, Pondicherry Andaman & Nicobar Islands	044-29550431, 9444077864 ro.chennai@awpo.in
7.	AWPO RO Danapur	Bihar & Jharkand	06115-222251, 8650135678 ro.danapur@awpo.in
8.	AWPO RO Delhi	Delhi & NCR	011-25683109, 7428785315, 9871109203 ro.delhi@awpo.in
9.	AWPO RO Guwahati	Arunachal Pradesh, Assam, Manipur, Meghalaya, Mizoram, Nagaland, Tripura, Sikkim	0361-2647823, 7086019860 ro.guwahati@awpo.in
10.	AWPO RO Bhopal	Madhya Pradesh & Chhattisgarh	0755-2921800, 9810909566 ro.bhopal@awpo.in
11.	AWPO RO Jalandhar	Punjab	0181-2262313,9878489418, 8787372798 ro.jalandhar@awpo.in
12.	AWPO RO Nagrota	J & K and Ladhak	9469030165 ro.nagrota@awpo.in
13.	AWPO RO Jaipur	Rajasthan	0141-2247590, 07073999079 ro.jaipur@awpo.in
14.	AWPO RO Kolkata	West Bengal & Orissa	033-22230252 9330453229, 600585043 ro.kolkata@awpo.in
15.	AWPO RO Lucknow	Uttar Pradesh	0522-2483573, 8005489455,8989932551 ro.lucknow@awpo.in
16.	AWPO RO Pune	Maharashtra Goa, Daman & Diu Dadra & Nagar Haveli	020-26334420, 9834971799, 8329803541 ro.pune@awpo.in
17.	AWPO RO Secunderabad	Andhra Pradesh & Telangana	040-27992512, 8332062512, 9704688266 ro.secunderabad@awpo.in
18.	AWPO RO Trivandrum	Kerala	0471-2350151, 9496489448 ro.trivandrum@awpo.in

- ➢ एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में, सुपर हाई एल्टीट्यूड क्षेत्रों में तैनात सैनिकों के लिए विशेष वस्त्र एवं पर्वतारोहण उपकरण (एससीएमई) की 57 में से 55 वस्तुओं का पूर्ण स्वदेशीकरण किया जा चुका है जो कुल स्टॉक का 97 प्रतिशत है। शेष दो वस्तुएँ का परीक्षण किया जा रहा है और 2026 तक स्वदेशीकरण कर लिया जाएगा।
- ➢ संचालन क्षमता को और सुदृढ़ करते हुए, सेना ने जनवरी 2025 में नया कोट कॉम्बैट (डिजिटल प्रिंट) पेश किया। एनआईएफटी नई दिल्ली द्वारा डिजाइन किया गया यह तीन-परत वाला, मानव-शरीर के अनुकूल (एर्गोनॉमिक) जैकेट उन्नत तकनीकी कपड़े का उपयोग किया गया है, जिससे सैनिकों के प्रदर्शन में विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में वृद्धि होगी। इस डिजाइन को नियंत्रक जनरल, पेटेंट, डिजाइन्स और ट्रेडमार्क कार्यालय में आधिकारिक रूप से पंजीकृत किया गया है।
- ➢ **भारतीय सेना की वर्दी का किसी भी रूप में अनधिकृत व्यक्ति द्वारा उपयोग दंडनीय अपराध है।**
- ➢ **पुरानी सेना वर्दी का किसी भी निजी संस्था को सौंपना या रीसायकल के लिए देना कड़ाई से प्रतिबंधित है।**

जानकारी के लिए संपर्क करें

प्रकाशक: स्ट्रेटजिक कम्युनिकेशन, रक्षा मंत्रालय (सेना), आईएचक्यू का अतिरिक्त महानिदेशालय

संपादक बातचीत ईमेल: editorbaatcheet@gmail.com

संपर्क नंबर: 011-23018665

प्रिंटर: एनीथिंग प्रिंटर, **फोन:** 011-45685718

BAATCHEET